

भारतीय शास्त्रीय गिटार वादकों द्वारा गिटार में किए गए संरचनात्मक परिवर्तन



डॉ. भारत शर्मा

संगीत अध्यापक, बाल भारती पब्लिक स्कूल, उत्तर प्रदेश

Paper received on : August 30, Return on September 5, September 23, Accepted on October 11, 2021

सार-संक्षेप

भारतीय संगीत में जिस शास्त्रीय गिटार वाद्य का स्वरूप आज हमारे समक्ष है वह भारतीय शास्त्रीय गिटार वादक कलाकारों की प्रेरणा एवं कल्पना शक्ति का सुन्दर मेल है। मूलतः गिटार एक पाश्चात्य वाद्य है जिसका प्रयोग भारतीय संगीत में भी बखूबी हो रहा है। परन्तु भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति के लिए जिस नवीन वाद्य का स्वरूप विश्वभर के सामने रखा गया वह अपने विकसित रूप की ओर अब भी अग्रसर है। जिनमें सितार, वीणा, सरोद आदि की झलक ना कि केवल वादन प्रक्रिया में है बल्कि गिटार की बनावट एवं संरचना में भी स्पष्ट दिखाई देती है। पं. ब्रजभूषण काबरा, पं. विश्वमोहन भट्ट, डॉ. वरुण कुमार पाल, पं. देवाशीष भट्टाचार्य, डॉ. कमला शंकर इत्यादि कलाकारों ने गिटार वाद्य को अपनी सूझ-बूझ, कल्पना शक्ति के माध्यम से गिटार वाद्य पर शास्त्रीय संगीत की सूक्ष्म से सूक्ष्म चीजों को बजाने के लिए अथक प्रयास किए। यह परिवर्तन साधारण गिटार से नहीं हो सकते थे। परिणामस्वरूप उन्हें इसमें विभिन्न प्रकार के परिवर्तन करने पड़े। तारों का प्रयोग स्वर मिलान, ब्रिज, डॉड, टयूनिंग की, तरब के तार, तुम्बा का प्रयोग साथ ही वाद्य की बैठक, वादन तकनीक, बजाने हेतु Finger Pick एवं बट्टा (Rod) आदि का इस्तेमाल। इन परिवर्तनों के पश्चात् गिटार को शास्त्रीय वाद्यों की श्रेणी में लाया जा सका। फलस्वरूप जो रूप सामने आया वह एक नवीन गिटार वाद्य था। गिटार वाद्य के जो नवीन रूप हमारे सामने आते हैं वह गिटार वादक कलाकारों एवं कारीगरों द्वारा किए गए अथक प्रयासों की देन है।

मुख्य शब्द : भारतीय संगीत, शास्त्रीय गिटार, गिटार वादक, नवीन परिवर्तन, विकसित रूप।

शोध-पत्र

गिटार वाद्य को भारतीय वाद्यों की श्रेणी तक पहुँचाने के लिए उसमें परिवर्तन आवश्यक थे। यह परिवर्तन तार संख्या एवं स्थान, तरब का प्रयोग, चिकारी, मिजराब के बोलों की उत्पादकता एवं लकड़ी एवं धातु आदि सभी के बदलाव या अन्य वाद्यों से प्रेरणा पाकर ही हो सकता था।

जिस प्रकार सितार, सरोद आदि वाद्यों पर रागों को प्रस्तुत किया जाता है, उसी प्रकार गिटार वाद्य पर भी रागों को प्रस्तुत किया जाता रहा है सितार, सरोद की तरह द्रुत लय में झाला भी बजाया जाता है। इस वाद्य में सितार सरोद वीणा का मिलाजुला असर देखने को मिलता है। इस वाद्य को बजाने वाले कलाकारों में पं. ब्रजभूषण काबरा पं. विश्वमोहन भट्ट, पं. देवाशीष भट्टाचार्य, पं. सलिल भट्ट, डा. वरुण कुमार पाल, डॉ. कमला शंकर प्रमुख लोकप्रिय कलाकार हैं। मूलतः गिटार में सर्वप्रथम परिवर्तन पं. गोपाल सिंह ने किया था जो कि प्रसिद्ध पखावज वादक थे। इनका जन्म ग्वालियर में संगीतमय परिवार में हुआ। थे सरोद वादक उस्ताद हाफिज़ अली खाँ के शिष्य थे। ये पखावज और गिटार दोनों ही अत्यंत दक्षता के साथ बजाते थे। वर्ष 1930 में गिटार वाद्य में शास्त्रीय संगीत के अनुरूप तारें लगाकर सर्वप्रथम इसे स्वतंत्र

वाद्य की श्रेणी में लाने का श्रेय भी गोपाल सिंह जो को जाता है। इन्होंने अपने गिटार में तरब की तारों और चिकारी का बखूबी इस्तेमाल किया। गिटार के किए गए परिवर्तनों के लिए इन्होंने कश्मीरी गेट, हैमिल्टन रोड पर स्थित वाद्य-निर्माता आर.के. मोहन से सहायता ली थी। इन्होंने गिटार में सम्भावित परिवर्तन करके दिए थे।

पं. ब्रजभूषण काबरा द्वारा गिटार में किए गए परिवर्तन

पं. ब्रजभूषण काबरा ने गिब्सन कम्पनी द्वारा निर्मित आर्च टॉप (एफकट) गिटार में तीन झंकार तथा दो चिकारी के तारों का समावेश किया है। चिकारी के तारों को तार षड्ज पर मिलाया चिकारी का प्रयोग पंडित ब्रजभूषण काबरा जी ने किया। तारों पर आघात करने के लिए श्री काबरा ने प्रारम्भ में सितार की मिजराब धारण किए, परन्तु गिटार में साधारणतः फिंगर प्रिक्स का प्रयोग किया जाता है। अन्य गिटार वादकों के समान पं. काबरा ने तारों को दबाने के लिए चपटी रॉड का प्रयोग किया है।^[1] श्री समरजीत मुखर्जी की ये बात कि चिकारी का सर्वप्रथम प्रयोग इन्होंने किया परन्तु सर्वप्रथम प्रयोग पं. गोपाल सिंह जी ने किया था।



पं. विश्वमोहन भट्ट द्वारा गिटार में किए गए परिवर्तन

श्री भट्ट ने गिटार के आकार में भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत करने के लिए क्रान्तिकारी परिवर्तन प्रस्तुत कर 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में वाद्य संगीत जगत में 'मोहनवीणा' नाम वाद्य को प्रस्तुत किया।

मोहनवीणा का ऊपरी भाग पाइनवुड से निर्मित है, इसमें पाँच टुकड़ों को एक साथ जोड़कर लगाया जाता है। इसका नीचे का भाग टीक की लकड़ी से बना है। कभी-कभी रोजवुड का भी प्रयोग किया गया है। वाद्य के आंतरिक भाग की ब्रेसिंग तुन से की गई है। खूँटियाँ एवं लंगोट के लिए पीतल की धातु का प्रयोग किया गया है।

आर्च टॉप

पं. भट्ट ने आर्च टॉप एफ कट गिटार में परिशोधन प्रस्तुत किए हैं। 'एफकट' की ध्वनि कुछ भिन्न प्रतीत होती है। इसकी भरी हुई दमदार आवाज़ है वाद्य के टोन एवं सस्टेन (निरंतरता) एफ-कट ध्वनि छिद्र के द्वारा काफी प्रभावित होते हैं। इस वाद्य की ब्रेसिंग में प्रयुक्त लकड़ियों की व्यवस्था पं. भट्ट ने ही व्यवस्थित किया है।

डाँड

पं. भट्ट ने अतिरिक्त तारों का प्रयोग किया है। फलस्वरूप डाँड को अधिक चौड़ा किया है। डाँड पर पर्दों के स्थान पर केवल स्वरों की स्थिति प्रदर्शित करने के लिए प्लास्टिक की सहायता से चिन्ह दर्शाये गये हैं। डाँड में धातु की छोटी-छोटी कीलें लगाई गई हैं जिनमें से तरब के तार निकलकर अपनी-अपनी खूँटियों तक पहुँचते हैं। डाँड के नीचे सरोद के समान एक धातु का तुम्बा लगाया है। श्री संजय शर्मा, पुत्र श्री बिशनदास जी के अनुसार पं. भट्ट ने यह तुम्बा वाद्य को सहारा देने के लिए लगाया है।

तारों

मुख्य बजाने वाली तारों के अतिरिक्त पं. भट्ट ने चार झंकार की तारों ड्रोन स्ट्रिम्स का प्रयोग किया है। पं. भट्ट इन्हें नि.ग.प.स. में मिलाते हैं। इसके

अतिरिक्त एक चिकारी की तार है जिसे तार षड्ज में मिलाया जाता है। पं. भट्ट ने सरोद वाद्य की झंकार की तारों के आधार पर गिटार में झंकार की तारों की व्यवस्था की है। इसके अतिरिक्त तरब के तारों का प्रयोग राग के अनुसार किया गया है। पहले तरब के तारों की संख्या 12 थी परन्तु अब पं. भट्ट ने तरबों की संख्या 13 कर दी है। कुल 19 तारों का प्रयोग पं. भट्ट अपने वाद्य मोहन वीणा में करते हैं। जिनमें तीन मुख्य तारें, तीन ड्रोन (झंकार) की तारें और एक चिकारी का तार होता है। तारों की अधिकता के कारण और गिटार की बनावट के आधार पर तारों का तनाव अधिक होता है। जिसके कारण तारों का खिंचाव का कुल तनाव लगभग 500 पाउण्ड है। जिसके कारण प्रत्येक स्वर बजाने पर तरबों की तारों से स्वर की ध्वनि अत्यन्त प्रभावशाली एवं मधुर निकलती है।

ब्रिज

पं. भट्ट ने मुख्य तारों के लिए अपेक्षाकृत चौड़ा एवं लम्बा ब्रिज रखा है क्योंकि पहली तार मोटी है। मुख्य ब्रिज टीक की लकड़ी का बना है। तारों के लिए बारहसिंह के सींग के बने ब्रिज का प्रयोग किया है। मुख्य तारों वाली ब्रिज के ऊपर जहाँ-जहाँ स्पर्श होता है वहाँ-वहाँ धातु की गोलाई युक्त पत्ती लगी हुई है। इससे ध्वनि बेहतर निकलती है एवं वाद्य का नाद बढ़ जाता है।

झंकार की तारों के लिए वाद्य के ऊपर की ओर एक छोटा सा ब्रिज लगा है जिस प्रकार अली अखबर खाँ शैली के सरोद में लगा होता है। इसके ऊपर से सभी झंकार (ड्रोन) तार गुजरते हैं एवं अपनी-अपनी खूँटियों तक पहुँचते हैं।

फिंगर रेस्ट बोर्ड

पं. भट्ट वादन के समय सहारा देने एवं अंगुलियों को टिकाये रखने के लिए फिंगर रेस्ट बोर्ड का प्रयोग गिटार के बाईं ओर करते हैं।

रॉड

पं. भट्ट वादन के लिए धातु की रॉड का प्रयोग करते हैं जो सामान्यतः हवाईन गिटार के लिए प्रयोग किए जाने वाले रॉड से अधिक बड़ी व चौड़ी है। रॉड की लम्बाई लगभग तीन साढ़े तीन इंच एवं डायमीटर आधा इंच है। वह इस रॉड का प्रयोग स्वरों को अधिक सुन्दर तकनीक एवं बेहतर समक्षता से बजाने के लिए करते हैं साथ ही मोटे रॉड से वादन में अच्छी पकड़ भी बनी रहती है।

फिंगर पिक, थंब पिक या स्ट्राइकर

पं. विश्वमोहन भट्ट पिक का प्रयोग करते हैं। जिसे वह सीधे हाथ की पहली एवं मध्यमा अंगुली में लगाते हैं। जिससे वह दा और रा का बोल बजाते हैं साथ ही अंगूठे में भी पिक पहनते हैं जिससे चिकारी की तार को बजाते हैं। साथ ही अंगूठे से एक थम्ब पिक पहनते हैं। पहली अंगुली के पिक से पहली तार (षड्ज स्वर) पर दा, रा या दिर

बोल का निकास भी करते हैं जिससे वादन की तकनीक को सरल एवं बेहतर बनाया जाता है।

गिटार जैसे पश्चिमी वाद्य के परिष्कृत रूप 'मोहन वीणा' के विलक्षण प्रस्तुति रूप को संगीत का सर्वोच्च 'ग्रेमी पुरस्कार' अर्जित करने वाले पंडित विश्वमोहन भट्ट जी ने अपनी जन्मजात रचनात्मक प्रवृत्ति एवं सूझबूझ के जरिये इस पाश्चात्य वाद्य में अपनी स्वयं की गणित के अनुसार डेढ़ दर्जन से भी अधिक तारों के झंकार की तरों जोड़ते हुए इसे सितार, सरोद एवं वीणा का अद्भुत संगम बना दिया।

मोहन वीणा की रचना

जब भट्ट जी संगीत के प्रति गहराई से सोचने के पश्चात् उन्हें ऐसा लगा कि गिटार का वास्तविक रूप पूरी तरह से भारतीय रागों को व्यक्त करने में सक्षम नहीं है।



उन्होंने ऐसा महसूस किया कि इसकी बनावट में थोड़ा बदलाव लाने से यह भारतीय शास्त्रीय संगीत के अनुसार अच्छा प्रभाव ला सकता है, यह सोचकर पं. जी ने गिटार के तार बदलने का विचार किया और उसके स्थान पर सितार के तार लगाने का निर्णय किया। उन्होंने खुद हथोड़ा और कील लेकर अपने हाथों से बदलने की कोशिश की। उन्होंने पहले के सारे तारों को निकाल दिया उसके स्थान पर तीन मुख्य तार लगायें (सा प सा) और दो ड्रोन तार और एक ऊँचे सप्तक के चिकारी के तार उसमें लगायें। कुछ दिनों तक इसे बजाने के बाद उसमें कुछ और तारों को जोड़ने की जरूरत महसूस हुई। अतः उन्होंने चार तरब के तार जोड़े।

एक नया गिटार उनकी बहन ने उन्हें उपहारस्वरूप दिया जिसका नाम था Craftman इस गिटार को बजाने के बाद उन्हें इस गिटार में कुछ बदलाव की इच्छा उत्पन्न हुई। उन्होंने आठ अतिरिक्त तरब के तार और दो चिकारी के तार लगाए। सर्वप्रथम गिटार में तरबों का प्रयोग पं. विश्वमोहन भट्ट ने ही किया। इस गिटार को उन्होंने कई समय तक बजाया और महसूस किया कि इसका ध्वनि माधुर्य में और सुधार की आवश्यकता है, जो कि सशक्त और प्रभावी हो। वो चाहते थे कि उनके वाद्य में सरोद की गहराई, सितार की तीक्ष्णता और वीणा का वादन शैली हो। दरअसल उत्तरी भारत की विचित्र वीणा और दक्षिण भारत का गोटुवाघम वीणा के आरम्भ में पं. भट्ट जी को स्लाइड गिटार

में परिवर्तन करने के लिए प्रेरित किया। उन्हें लगा कि इन तीन पुराने वाद्य यंत्रों की ध्वनि एवं तकनीक को मिलाकर स्लाइड गिटार का भारतीयकरण कर सकते हैं।

पं. भट्ट जी की देखरेख में तीन प्रकार के मुख्य तार लगाए गए। चार ड्रोन के तारों को खूँटी Peg Head की तरफ से आते हुए Bass String पर लगाए गए। ड्रोन तार को Melody तार से नीचा रखा गया ताकि Melodic तार बिना रुके बजते रहे।

सितार जैसी तारों का प्रयोग पहले तीन मुख्य तारों के लिए हुआ था और Pre Wound तारों का प्रयोग आखिरी चार तारों के लिए किया गया। लेकिन उन्होंने यह महसूस किया कि स्टील बार चलाने पर Pre Wound तारों से घर्षित स्वर उत्पन्न हो रहे थे जो कि मधुर नहीं था। Pre Wound तारों से उत्पन्न स्वरों में निरन्तरता नहीं थी, जिसके कारण हल्के से दबाव पड़ने पर उसका खिंचाव बदल जाता था और उसके कारण स्वरों का स्थान भी बदल जाता था। अतः Pre Wound तारों के स्थान पर स्टील की तारें लगाई गईं। अतः बारह तरब की तार पहले से लगे हुए तारों की नीचे फिंगर बोर्ड पर लगाए गए। सितार के पिक्स को बीच की ऊँगली और तर्जनी में पहना जाता था तथा बेंजों थम्ब पिक को बांये हाथ में पहना जाता था। चमकदार रॉड को तारों पर घसीटने के लिए दायें हाथ में स्वर उत्पन्न करने के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

इस प्रकार 1988 ई. में एक नया स्वरूप सामने आया। जिसकी ध्वनि अनोखी थी। इस वाद्य में ध्वनि निरन्तरता इतनी अधिक थी। इसमें मीड और घसीट की काफी गुंजाइश थी जो कि गायकी और तंत्रकारी, अंगों के लिए बेहतर था। इसके हल्के वजन और छोटे आकार की वजह से इसे कहीं भी ले जान आसान था। इस वाद्य का नाम मोहनवीणा पड़ा। मोहन, पं. भट्ट के बीच का नाम है तथा वीणा, माँ सरस्वती का वाद्य है। पं. भट्ट जी के दिमाग में यह नाम तब आया जब वे प्रातःकालीन रागों को बजाने में लीन थे।

“मोहनवीणा का ऊपरी हिस्सा Curved Spruce है, पीछे और बाल का हिस्सा तथा गर्दन Mahogany का है। Finger Board, Rosewood का है जो चपटा और बिना Fret का है। यह उन्नीसवीं सदी के Curved Top-Jazz Guitar से मिलता है। जिसका Sound Hole Cut Shape की तरह है। इसके स्वर बहुत दूरी तक साफ सुनाई देते हैं। [2]

विश्व वीणा

मोहन वीणा का निर्माण करने के बाद पं. विश्व मोहन भट्ट की सांगीतिक जिजीविषा तथा अथक प्रयास ने एक नए वाद्य को विकसित किया, जिसे आजकल विश्व वीणा के नाम से जानते हैं। लेकिन यह वाद्य उससे भी कुछ कदम आगे है इसमें पाश्चात्य वाद्य हार्प भारतीय स्वरमण्डल के भी कुछ लक्षण हैं जो कि इसे अनोखी ध्वनि प्रदान करता है। हार्प भारतीय स्वरमंडल की तरह होता है जिसके तार गायकों को निरन्तर

स्वर सहायता प्रदान करते हैं। मोहन वीणा तीन प्रकार की लकड़ियों से बना है। महागनी, पाईन और रोज़वुड से इसलिए इसके बगल पीछे, ऊपर और गले पर जोड़ होता है।

लेकिन इस बार पं. जी ने एक ही लकड़ी के बने टुकड़े से नए वाद्य बनाने की कल्पना की।



इसके लिए Seasoned Oakwood का एक बड़ा पुराना टुकड़ा लाया गया जो कि मुड़ा हुआ था और इससे नए वाद्य की रचना की। प्रारंभ में लकड़ी के टुकड़े को बीच से खोखला किया गया ताकि वह वॉक्सनुमा दिखें। इसमें कोई भी जोड़ नहीं था और इसे बन्द कर दिया गया। इसमें मोहनवीणा की तरह Sound Hole नहीं बनाया गया बल्कि सिर्फ ऐसी व्यवस्था की गयी कि ध्वनि अप्रत्यक्ष रूप से बाहर आ सके। इस वाद्य की पूरी लम्बाई को दो हिस्सों में बाँटा गया, इसमें 35 तारें होती हैं। जो हिस्सा वादक के गोद में था वह बिल्कुल 20 तारों वाले मोहनवीणा की तरह था और उसका दूसरा हिस्सा जो वादक के शरीर से बाहर था वह पूरी तरह से हार्प पर आधारित था। इसमें 15 ड्रोन के तार थे जो कि मुख्य तारों के कम्पन को पकड़ते थे। इन 15 तारों को तरब की तारों की श्रेणी में रखा जा सकता है। इनका असर तरब की तारों से ज्यादा था क्योंकि इन्हें हाथ से भी बजाया जा सकता था। इसकी मोटाई तरब की तारों से ज्यादा थी।

इस वाद्य की खासियत यह है कि मोहनवीणा वाले भाग में बजाये जाने वाले संगीत को विश्ववीणा के हार्प वाले भाग से अच्छी सहायता मिलती है। हार्प वाला भाग पर बजाये गये स्वरों को अच्छा सहयोग प्रदान करता है।

शंकर गिटार

इमदादखानी घराने की शैली से गिटार पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत करने वाली विख्यात एवं विश्व की प्रथम महिला गिटार वादिका डॉ. कमला शंकर ने अपनी कल्पना व सूझ-बूझ से ऐसे वाद्य का निर्माण किया जिसका नाम 'शंकर-गिटार' रखा। इसे उन्होंने विशनदास जी के सौजन्य से बनवाया है। यह गिटार अन्य गिटार से थोड़ा अलग है। इसका शरीर



अन्दर से पूरा खोखला है। इसके नीचे का हिस्सा तथा तबली वाला भाग पतला है, और इसके किनारे की दीवार पर ठोस लकड़ी का बना हुआ होता है। इस गिटार में कोई भी साउंड होल नहीं है। इसका नीचे का भाग चपटा होता है, जिस वजह से इसे



गोद में सीधा रखकर बजाने में आसानी होती है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसकी बनावट इस तरह की गई है कि इसकी अनुगूँज काफी देर तक ठहरती है और स्वरों की निरन्तरता काफी देर तक बनी रहती है। इसका स्वर माधुर्य अन्य गिटारों से बिल्कुल अलग है। सबसे बड़ी बात है कि इसमें अप्रिय ध्वनि को बहुत कम करने की कोशिश की गयी है। यह एक ही लकड़ी के मजबूत टुकड़े से बनाया गया है। इसमें जोड़ नहीं होता है। जिस वजह से इसमें स्वर के बेसुरे होने की संभावना नहीं रहती तथा इसके टुटने या दरार पड़ने का भी डर नहीं रहता।

इस गिटार में मुख्य चार तार हैं जिन्हें मध्य सा प तथा मन्द्र सा प में मिलाते हैं। एक चिकारी का तार, दो सहायक तार तथा तरब के 12 तार हैं जिसे राग के अनुसार मिलाते हैं। डॉ. कमला शंकर ने 'शंकर गिटार' पर देश-विदेश में बहुत सारे कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं तथा इस गिटार को काफी लोगों द्वारा सराहा गया है [3]

हंस वीणा

इस वाद्य की वादन विधि भी बाकी शास्त्रीय गिटारों के समान ही होती है। परन्तु इसकी संरचना, आकार, निर्माण के लिए उपयुक्त सामग्री, सबसे बढ़के इसके ध्वनि उत्पन्नता के कारण स्वर शैली और गुण, विचित्र वीणा के सदृश मालूम पड़ते हैं। यही विशेषता इसे अन्य



शास्त्रीय गिटारों से भिन्न करती हैं। इसे बाएँ हाथ में स्लाईड के द्वारा और दाएँ हाथ में विशेष प्रकार के प्लेक्ट्रम या पिक से बजाया जाता है।

स्लाईट गिटार या शास्त्रीय गिटार में प्रयोग किए जाने वाले फ्रेट बोर्ड को छोड़कर अतिरिक्त सभी कुछ इसके भारतीयकरण को दर्शाता है। इस वाद्य का निर्माण एक ही लकड़ी के टुकड़े से बनाया गया है।

इसमें पाँच प्रमुख तार होती हैं—1. मुख्य तार, 2. सहायक तार, 3. चिकारी और 12 तरब की तार हैं।

गिटार के गर्दन के किनारे को हंस के समान खूबसूरत वर्काकार रूप दिया गया है। जो इसे इसके नाम के अनुसार स्पष्ट करता है।

सितार, सरोद, वीणा की भाँति तारों की खूँटियाँ बाईं तरफ होती हैं। इसकी आवाज वीणा की आवाज से ज्यादा सदृश मालूम पड़ती है इस वाद्य की विशेषता यह है कि इसमें ध्वनि की निरन्तरता बनी रहती है जिससे वादक को इस पर गायकी अंग बजाने में भी मदद मिलती है।^[4]

पं. देवाशीष भट्टाचार्य द्वारा निर्मित वाद्य

पं. बृजभूषण काबरा जी के प्रमुख शिष्य, देवाशीष भट्टाचार्य ने गिटार वाद्य को विकसित करने में अपनी विशेष भूमिका निभाई।

अपनी लगन, संगीत के प्रति समर्पण के साथ-साथ उन्होंने अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग न केवल नई रचनाओं के निर्माण के लिए किया बल्कि गिटार वाद्य की शास्त्रीय संगीत के साथ सम्बन्ध को आखिरी सीमा तक जानने तक का प्रयास किया।



उन्होंने Trinity of Guitar का निर्माण किया यह पाश्चात्य संगीत वाद्य Jazz, Blues गिटारों और भारतीय वाद्यों का मिश्रण है।

Trinity का अर्थ होता है—त्रिनेत्र, जिसे माँ दुर्गा और भगवान शंकर के तीन नेत्रों से सम्बन्धित माना।

इस त्रिनेत्र में तीन प्रकार के गिटार हैं—

चतुरंगी, गांधर्वी, आनन्दी।

चतुरंगी और गांधर्वी का निर्माण उन्होंने कलकत्ता में किया तथा आनन्दी का निर्माण ब्रिटिश कोलम्बिया में किया।

चतुरंगी

इस गिटार में श्री भट्टाचार्य के गिटार वाद्य की अपनी असली आवाज को बरकरार रखते हुए वायलिन, रूद्र वीणा, सरोद और सितार चारों

वाद्यों के रंगों को दिखाने का प्रयास किया। इन चारों वाद्यों के मिश्रित रूप को उन्होंने चतुरंगी कहा। इसमें कुल 27 तार होती हैं।

गांधर्वी

इस वाद्य का निर्माण भारतीय वाद्य सरस्वती वीणा, संतूर, सांरगी तथा पाश्चात्य वाद्य (12 तार गिटार) के मिश्रण से किया गया। इस गिटार में 12 तार हैं।

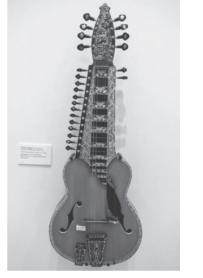
आनन्दी

आनन्द (Joy) से सम्बन्धित है। यह शुद्ध रूप से भारतीय लोक संगीत गिटार हैं। इसमें चार तार होते हैं जिन्हें क्रमशः E, G#, B, E मिलाया जाता है। यह आकार में साधारण गिटार से छोटा होता है।^[5]

सात्विक वीणा

सात्विक वीणा गिटार का ही परिवर्धित तथा परिमार्जित रूप हैं जिसमें उन्होंने ड्रोन के एक तार को कम किया है। इस तरह इसमें 3 मुख्य तार, 3 ड्रोन के तार, एक चिकारी और बारह तरब की तारें हैं इसकी व्यवस्था मोहनवीणा की ही तरह है। इसमें चिकारी का स्थान बदल दिया गया है, पर चिकारी वही है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें तार लकड़ी पर रखा गया है। इसमें ब्रिज लकड़ी के होते हैं। जिस तरह सभी गिटार में ब्रिज के ऊपर स्टील या पीतल का पतला टुकड़ा लगा होता है और उसके ऊपर से मुख्य तार गुज़रता है, इसमें ऐसा नहीं है। इसमें तारों के लिए किसी भी लौह धातु का प्रयोग नहीं किया गया है। इसमें टेल पीस भी लकड़ी का होता है। यदि लकड़ी पर तार रखा जाए तो आवाज बन्द हो जाती है पर इसमें ऐसा नहीं है यही इसकी एक मुख्य विशेषता है। इसकी आवाज बहुत ही अच्छी है तथा इसके तारों को छेड़ने पर स्वरों की निरन्तरता काफी देर तक बनी रहती है।^[6]

सात्विक वीणा पर उन्होंने देश-विदेश में बहुत सारे कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं और उनकी सात्विक वीणा को सभी जगह सराहा गया है। वर्तमान में इसका पूर्णतः भारतीयकरण हो चुका है। भारत में गिटार की एक अलग पहचान बन चुकी है। इसका श्रेय भारतीय वाद्य कारीगरों और कलाकारों को जाता है। वादक कलाकारों में क्रमशः पं. गोपाल सिंह, पं. बृजभूषण काबरा, पं. विश्वमोहन भट्ट, पं. देवाशीष भट्टाचार्य



तथा अनेक प्रतिभाशाली कलाकारों को जाता है। गिटार के इस परिवर्तन में भारतीय वाद्य सितार, सरोद व विचित्रवीणा का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। विभिन्न विद्वान कलाकारों ने अपनी प्रतिभा एवं गिटार को शास्त्रीय संगीत के लिए और अवसर प्रदान कर इसमें शोध कर नवीन रूप दिये। जिससे यह वाद्य अब शास्त्रीय संगीत से कहीं अछूता नहीं रहा है। वर्तमान समय में गिटार की तकनीक, बनावट आदि का परिष्कृत रूपों के प्रयोग में वृद्धि हो रही है तथा आगे भी संभावना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. साक्षात्कार : श्री समरजीत मुखर्जी (पटना) ब्रजभूषण काबरा के शिष्य, सायं 18:00 बजे, 21 जुलाई 2015
2. www.vishwamohanbhatt.com इंटरनेट द्वारा प्राप्त जानकारी, सायं 18.34 बजे, 27 जुलाई 2021
3. साक्षात्कार : डॉ. कमला शंकर, दोपहर 3.00 बजे, 20 मई 2012 और जून 2018
4. www.barunpalhansveena.net इंटरनेट द्वारा प्राप्त जानकारी, 22 जनवरी 2017, रात 10.10 बजे
5. www.debashishbhattacharya.com इंटरनेट द्वारा प्राप्त जानकारी, 3 अगस्त 2017, रात 08.00 बजे
6. साक्षात्कार : पं. सलित भट्ट, दोपहर 14.30 बजे, 23 अप्रैल 2014